Vol 3 Issue 4 Oct 2013

Impact Factor : 1.2018 (GISI)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-4, Oct-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

आध्यात्म विज्ञान से ही मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा सम्भव

शोभा राठी
इतिहास विभाग सिहांनिया विश्वविद्यालय पचेरी बारी झुन्झनू राज

परिचय :आध्यात्क का विज्ञान आत्म विज्ञान है इसमें आत्मा के गुणों को समझकर उनके अनुरूप कार्य करना होता है। आत्मा के गुण है वो अनेक प्रकार से अनेक–अनेक रूपों में दर्शायें जाते है। जैसे–जैसे त्रिरत्नों का स्वरूप,दस लक्षण,धर्म,बारह भावना,मेरी भावना,व्यक्ति इन गणों के अनुरूप आचरण कर समता भाव प्रापत कर और उसी के अनुरूप कार्य करें तो मानवीय मूल्यों को गिरने से बचाया जा सकता है।

प्रस्तवाना :
उदेश्य

त्रिरत्नों का स्वरूप :–

सम्यक् दर्शन,सम्यक् ज्ञान,सम्यक् चरित्र

सम्यक दर्शन :– मुक्त के लिए सात तत्वों (जीव,अजीव, आश्रव,बन्ध, संवर,निर्जरा, मोक्ष) पर दृढ आस्था का होना अम्यग्दर्षन है और अनका ठीक–ठीक ज्ञान होना ही सम्यग्ज्ञान है। ये दोनो ही आगे बढने की भूमिका है। जिस जीव को इस प्रकार का दृढ श्रद्धान और ज्ञान हो जाता है उसे सम्यग्दृष्टि कहते है अर्थात उसकी दृष्टि ठीक मानी जाती है। सम्यग्दर्शन हुए बिना कोई ज्ञान सम्यग्ज्ञान नही हो सकता न कोई चरित्र सम्यग्चरित्र है।

सम्यक् दर्शन के आठ अंग:–

1.निःशकिंत
2.निःकाक्षित
3.निर्विचिकित्सा
4.अमूढदृष्टि
5.उपगूहन अंग
6.स्थितिकरण
7.वात्सल्य अंग
8.प्रभावना

सम्यक ज्ञान :–

ज्ञान आत्मा का गुण है। जानना उसकी पर्याय अर्थात कार्य है। सामान्य ज्ञान के दो भेद है।

1. सम्यक् ज्ञान 2. मिथ्या ज्ञान

सम्यक् दर्शन से युक्त ज्ञान को सम्यक् ज्ञान कहते है। सम्यक् ज्ञान का संबंध आत्मोंत्थान के साथ है। जिस ज्ञान का उपयोग आत्मा विकास के लिये किया जाता है और जो पर पदार्थ से पृथक कर आत्मा का बोध कराता है वह सम्यक् ज्ञान है।

सम्यक् ज्ञान के पॉच भेद है :–
मतिश्रुताधधि मनः पर्यय केवालानि ज्ञानम्
1.मतिज्ञान – इन्द्रिय और मन के द्वारा यथा योग्य पदार्थो को जानने वाला।
2.श्रतुज्ञान– मति ज्ञान से जाने गये पदार्थो को विशेष जानना।
3.अवधिज्ञान – इन्द्रियों की सहायता के बिना जानने वाला ज्ञान।
4.मनःपर्यय – पर के मन में स्थित पदार्थो को जानने वाला।
5.केवलज्ञान – समस्त पदार्थो को जानने वाला ज्ञान

सम्यक् चारित्र :– चारित्र मोक्षमार्ग का एक प्रधान अंग है। अभिप्राय के सम्यक् व मिथ्या होने से चारित्र भी सम्यक् व मिथ्या हो जाता है। निश्चय,व्यवहार, सराग,वीतराग,स्व,पर आदि भेदों से वह अनके प्रकार से निर्दिष्ट किया जाता है परन्तु वास्तव में वे सभ भेद–प्रभेद किसी न किसी एक वीतरागता रूप निश्चय चारित्र में समा जाते है।

सम्यक चारित्र के 13 अंग है
पांच महाव्रत (अहिसा,सत्य,अस्तेय,अपरिग्रह,बह्मचर्य) पांच समिति (ईर्या,भाषा,ऐषणा,आदान–निक्षेपण,प्रतिष्ठापन) और तीन गुप्ति (मन,वचन,काय)

सम्यक् व मिथ्या चारित्र
संसारियों का चारित्र वास्तव में दो प्रकार का है – सम्यक् चारित्र और मिथ्या चारित्र। भगवान अर्हत परमेश्वर के मार्ग से प्रतिकूल मार्गाभास में मार्ग का आचरण करना मिथ्या चारित्र है। अथवा निज आत्मा के अनुष्ठान रूप से विमुखता मिथ्याचारित्र है। सम्यक् चारित्र क्योकि समस्त पाप मुक्त मन,वचन,काय के योगों के त्याग से सम्पूर्ण कषायों से रहित होने के कारण निर्मल पदपदार्थो से विरक्तातारूप चारित्र होता है अतः वह आत्मा का स्वरूप है।

सम्यक् चारित्र के लक्षण
सम्यक्चारित्र के लक्षण निश्चय व व्यवहार या सराग व वितराग चारित्र के रूप है। निश्चय जीव का अनतरंग भाव चारित्र व व्यवहार जीव का ब्राह्य त्याग चारित्र है।

व्यवहार चारित्र का लक्षण
यह करने योग्य कार्य ऐसा ज्ञान होने के अनन्तर अकर्तव्य का त्याग करना चारित्र है।

सराग –वीतराग चारित्र निर्देश :– सम्यग्चारित्र के अन्य प्रकार से भी दो भेद है सराग व वीतराग। शुभोपयोगी साधु का व्रत,समिति,गुप्ति के विकल्पों का रूप सराग चारित्र है और शुद्धोपयोगी साधु के वीतराग संवेदनरूप ज्ञाताा द्रष्टा भाव वीतराग चारित्र है।

सराग चारित्र का लक्षण :– जो संसार के कारणों के त्याग के प्रति उत्सुक है परन्तु जिसके मन से राग के संस्कार नष्ट नही हुए है वह सराग कहलाता है। प्राणी और इन्द्रियों के विषय में अशुभ प्रवृति के त्याग को संयम कहते है सरागी जीव का संयम सराग है।

वीतराग चारित्र का लक्षण :– शुभ और अशुभ दोनो प्रकार के योगों से निवृति वीतराग साधु का चारित्र है। स्वरूप में विश्रान्ति ही परम वीतराग चारित्र है।
रागादि से रहित स्वाभाविक सुख के आस्वादन से निष्चल चित होना वीतराग चारित्र है।

अधिगत व अनधिगत चारित्र निर्देश :– जो ब्राह्म उपदेष के बिना स्वयं ही चारित्र मोह के उपषम व क्षय से प्राप्त आत्मा प्रसार से चारित्र परिणाम को प्राप्त हुए है ऐसे उपषान्त कषाय और क्षीण कषाय गुणस्थानवर्ती जीव अधिगत चारित्रार्य है और जो अन्दर में चारित्र मोह का क्षोपषम होने पर ब्राह्मोंदेष के निमित से विरति परिणाम को प्राप्त हुए है वे अनधिगत चारित्रार्य है।

जीव सामान्य का लक्षण :– जो दष प्राणों से (प्राण जीव में जीवितव्य के लक्षणों को कहते है, वह दो प्रकार है निश्चय और व्यवहार। जीव के चेतनत्व शक्ति उसका निश्चय प्राण है और पांच इन्द्रिय–स्पर्ष,रस,घ्राण,चक्षु,श्रोत्र तथा मन,वचन,काय,आयु, व श्वासोच्छ्वास ये दस व्यवहार प्राण है) जीता है जियेगा और पहले जीता था वह जीव है।

दष प्राणो में से अपनी पर्यायानुसार गृहित यथायोग्य प्राणों के द्वारा जो जीता है जीता था व जीवेगा इस त्रिकालिक जीवनगुण वाले को जीव कहते है।

पांच भाव (औदयिक,औपषमिक,क्षायिक,क्षायोपषमकि और पारिणामिक) जिस तथ्य के स्वाव हो वही जीव कहलता है।

जीव के पर्यायवाची नाम :–जीव,प्राणी,जन्तु,क्षेत्रज्ञ,पुरूष,पुमान,आत्मा, अन्तरात्मा और ज्ञानी ये सब जीव के पर्यायवाची शब्द है।

जीव के पर्यायवाची नामों की विवक्षाः–

दष प्राण विद्यमान रहने से यह जीव प्राणी कहलाता है। बार–बार जन्म धारण करने से जन्तु कहलाता है। इसके स्वरूप को क्षेत्र कहते है, उस क्षेत्र को जानने से य क्षेत्रज्ञ कहलाता है। पुरू अर्थात अच्छे–अच्छे भोगो में शयन करने से अर्थात प्रवृति करने से यह पुरुष कहा जाता है और अपने आत्मा को पवित्र करने से पुमान कहा जाता है। नर नरकादि पर्यायों में निरन्तर गमन करते रहने से आत्मा कहा जाता है और ज्ञानावरणादि आठ कर्मो के अन्तर्वर्ती होने से अन्तरात्मा कहा जाता है। ज्ञान गुण सहित होने से ''ज्ञ'' और ज्ञानी कहा जाता है। इसी प्रकार यह जीव अन्य भी अनेक शब्दो में जानने योग्य है। इसके अतिरिक्त सत्य,असत्य और योग्य,अयोग्य वचन बोलने से वक्ता है।

परिषह का लक्षण :–

मार्ग से च्युत न होने के लिए और कर्मो की निर्जरा के लिए जो सहन करने योग्य हो व परिषद है। क्षुदापि वेदना के होने पर कर्मो की निर्जरा करने के लिए उस सह लेना परिषह है।

परिषह के भेद :–

क्षुधा,तृषा,शीत,उष्ण,दषमषक,नग्नता,अरित,स्त्री,चर्या,निषधा,शयुया, आकोष,वध,याचना,अलाभ,रोग,तृणस्पर्ष,मल,सत्कार–पुरस्कार,प्रज्ञा,अज्ञान और अदर्षन इन नाम वाले परिषह है।

तप :–

तप नाम यद्यपि कुछ भवावह प्रतीत होता है परन्तु वास्तव में ऐस नही है यदि अन्तरंग वीतरागता व सभ्यता की रक्षा व वृद्धि के लिए किया जाये तो तप एक महान धर्म सिद्ध होता है क्योकि वह दुःखदायक न होकर आनन्द प्रदायक होता है। इसलिए ज्ञानी शक्ति अनुसार तप करने की नित्य भावना भाते रहते है और प्रमाद नही करते। इतना अवष्य है कि अन्तरंग साम्यतासे निरपेक्ष किया गया तप कायक्लेष मात्र है, जिसका मोक्षमार्ग में कोई स्थान नही। तप द्वारा अनादि के बधें कर्म व संस्कार क्षण भर में विनष्ट हो जाते है। इसलिए सम्यक् तप का मोक्षमार्ग मे एक बड़ा स्थान है। इसी कारण गुरुजन शिष्यों के दोष दूर करने के लिए कादाचित प्रायश्चिय रूप में भी उन्हे तप रने का आदेशा दिया करते है।

तप के भेदः–

तपाचार के दो भेद है – ब्राह्य व आभ्यन्तर। उनमें भी एक–एक के छह–छह भेद है।

ब्राह्य तक के भेद :–

अनषन,अवमौदर्य,वृतिपरिसंख्यान,रसपरित्याग,विविक्तषयुयासन और काया क्लेष यह छह प्रकार का ब्राह्य तपहै।

अभ्यन्तर तप के भेदः– प्रायश्चिय,विनय,वैयावृत्य,स्वाध्याय,व्युत्सर्ग और ध्यान यह छह प्रकार का आभ्यन्तर तप है।

ब्राह्य–अभ्यान्तर तक के लक्षण :–

ब्राह तप ब्राह्यद्रव्य के अवलम्बन से होता है और दूसरों को देखने में आता है इसलिएए उस ब्राह्य तप कहते है और मन का नियमन करने वाला होने से प्रायस्तिादि को आभ्यन्तर तप कहते है।

अणुव्रत,महाव्रत,गुणव्रत,शिक्षाव्रतः– हिसां,असत्य,चोरी,अब्रह्म और परिग्रह से निवृत होना व्रत है। व्रत दो प्रकार के है–श्रावको के अणव्रत या एक देष व्रत तथा साधुओं के महाव्रत या सर्वदेषव्रत हिसादि से एक देष निवृत होना अणुव्रत और सब प्रकार से निवृत होना महाव्रत है।

हिसा,असत्य,चोरी काम (कुषील) और पूर्च्छा अर्थात् परिग्रह इन पांच स्थूल पापों से विरक्त होना अणुव्रत है। हिसादि पांचों पापों का मन,वचन,काम व कृत कारित अनुमोदना से त्याग करना महापुरूषों का महाव्रत है।

दिग्व्रत व देशव्रत में अन्तर :–

दिग्विरति यावज्जीवन :– सर्वकाल के लिए होती है है जबकि देषव्रत शक्त्यानुसार नियतकाल के लिए होता है।

अनर्थदण्डव्रत :– लोहे के शस्त्र तलवार कुदाली वगैरह के तथा दण्ड और पाष (जाल) आदि के बेचने का त्याग करना,झूठी,तराजू तथा कूटमान आदि के बांटों को कम नही रखना तथा बिल्ली, कुता आदि प्राणियों का संग्रह नही करना तीसरा अनर्थदण्डव्रत है।

संदर्भ सूची :–

1.आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ति – '' गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाग–1 सम्पादन–अनुवाद–डॉ आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये सिद्धान्ताचार्य प. कैलाशचन्द्र शास्त्री प्रकाशक पृ.सं. 4–5 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 1998

2.वही पृष्ठ 5

3.स्याद्वादमंजरी पृष्ठ 413,411–परम श्रुत प्रभावक मण्डल 1991

4.पं.कैलाश चन्द शास्त्री जैन धर्म पृष्ट 120 प्रकाशक भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ चौरासी मथुरा 2001

5.पं. कैलाश चन्द्र शास्त्री जैन धर्म पृष्ट 120 प्रकाशक भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ, चौरासी मथुरा 2001 पृष्ठ 134,136,139,140

6.पं. कलौश चन्द शास्त्री–जैन धर्म प्रकाशक भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ चौरासी मधुरा 2001 पृष्ठ 203,204,205

7.पं. कैलाश चन्द शास्त्री–जैन धर्म

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net